आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2496 • उदयपुर, सोमवार 25 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

स्थापना दिवस सप्ताह – 7 वां दिन

लखनऊ में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा लखनऊ शाखा में दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगजनो के लिये निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण के शिविर सम्पन्न किया। शिविर में दिव्यांग भाई–बहनों का जांच एवं 05 कृत्रिम अंग, 20 कैलीपर्स का वितरण किया गया । उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री वी.के. सिंह जी, अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा जी श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि श्री नवीन जी, श्री लक्ष्मण प्रसाद जी, श्री सुभाष चंद जी, श्री दिलीप जी (सभी समाजसेवी) आदि पधारे। संस्थान शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी ने संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक 35 वर्षों में की गई सेवाओं का जिक्र किया।

उन्होंने बताया कि संस्थान अब तक 4 लाख से अधिक दिव्यांग के सफल ऑपरेशन कर भाई–बहनों को अपने पैरों पर खड़ा किया, संस्थान द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में निःशुल्क राशन किट वितरण किया जा रहा है। संस्थान द्वारा दिव्यांग निर्धन एवं बेसहारा लोगों के लिये निःशुल्क विविध सेवा प्रकल्प शुरू हैं। शिविर में बृजपाल सिंह जी (स्नेह मिलन प्रभारी), श्री रमेशचंद जी, श्री बद्रीलाल जी शर्मा (आश्रम प्रभारी) एवं नाथु सिंह जी ने सेवा दी।

मालपुरा (टोंक) में दिव्यांग जाँच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के बारादरी बालाजी पुरानी तहसील मालपुरा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री बारादरी रामचरित मानस मण्डल शिविर में 17 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 16 के लिये कैलिपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती इन्दु जी मित्तल (महिला प्रदेश अध्यक्ष अग्रवाल समाज, चौरासी) अध्यक्ष श्री त्रिलोक जी जैन (अध्यक्ष भाजपा मण्डल मालपूरा), विशिष्ट अतिथि श्रीगुंजन जी मित्तल (ब्लॉक अध्यक्ष महिला अग्रवाल समाज, मालपुरा), श्री विकास जी जैन (समाजसेवी), श्री सुरेन्द्र जी जैन (शाखा संयोजक संस्थान सेवा संस्थान, मालपुरा), कृपा करके पधारे। शिविर में श्री नाथुसिंहजी, श्री प्रकाश मेघवाल, (टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दीं।

बोरीवली (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के बोरीवली (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई द्वारा राजस्थान भवन, जामली गली, बोरिवली (वेस्ट) में आयोजित शिविर में 82 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग 33 तथा 49 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री गोपाल जी शेट्टी (सांसद महोदय उत्तरीपूर्व, बोरीवली), अध्यक्षता श्री सुनिल जी राणे (विधायक महोदय बोरीवली), विशिष्ट अतिथि श्री प्रवीण जी शाह (नगर सेवक, बोरीवली), श्री योगेश जी लखानी (मैनेजिंग डायरेक्टर, ब्राईट ग्रुप), श्री यतीन जी मागिया, श्री संजय जी सेमलानी (सहयोग सेवा ग्रुप) कृपा करके पधारे। शिविर में श्री कमलचंद जी लोढ़ा (मुम्बई शाखा,संयोजक) शिविर में श्रीनाथुसिंहजी,श्री प्रकाश मेघवाल,(टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्रीमुकेश जी सेन, श्रीआंनद जी, श्री महेन्द्र जी जाटव मुम्बई आश्रम, श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर),श्री मुकेश त्रिपाठी रजिस्ट्रेन ने भी सेवायें दीं।

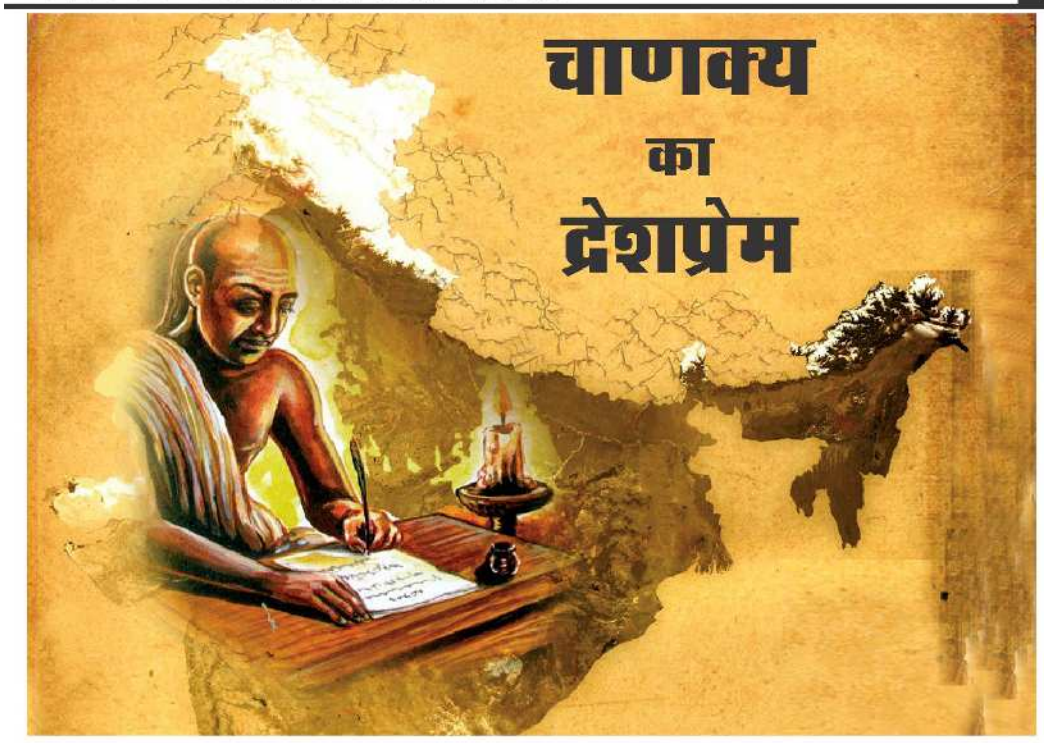

व्यक्ति को अपने निजी कार्यो के लिए कभी भी राजकीय सुविधाओं को लाभ नहीं लेना चाहिए। ऐसा करना देश के प्रति अटूट प्रेम और निष्ठा को अभिव्यक्त करना ही है।

आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के नाम से भारत के इतिहास में अपना अलग ही स्थान रखते है। वे मौर्य साम्राज्य में सम्राट के बाद सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे। लेकिन उन्होंने जन धन का कभी दुरूपयोग नहीं किया। उनकी नीतियों पर मनन से हम भी समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते है। उनकी लोकप्रियता के बारे में सुनकर एक चीनी दार्शनिक उनसे मिलने उनके आवास पर गया तब अन्धेरा हो चुका था।

चीनी दार्शनिक ने देखा कि आचार्य एक दीपक के प्रकाश में कुछ लेखन में व्यस्त हैं। जैसे ही चाणक्य की नजर उस पर पड़ी तो उन्होंने मुसकुराते हुए स्वागत किया और अपने निकट आसन प्रदान किया इसके बाद चाणक्य ने दीपक को बुझाकर एक दूसरा दीपक प्रज्ज्वलित किया। उसके बाद वे आगन्तुक से बातचीत में व्यस्त हो गए ।

दार्शनिक ने लौटते वक्त जिज्ञासावश चाणक्य से पूछा मेरे आगमन पर अपने एक दीपक बुझाकर दूसरा दीपक जला दिया जबकि दोनों में कोई अंतर नहीं था।क्या यह कोई परम्परा थी ? आचार्य उसके प्रश्न को सुनकर मुसकुराए और बोले, मित्र यह कोई परम्परा नहीं बल्कि जब अपने प्रवेश किया उस समय मैं राजकार्य कर रहा था। इसलिए वह दीपक राज्य के खर्च से जल रहा था। जब आए तब मैंने बुझाकर अपना दीपक इसलिए जलाया क्योंकि यह एक व्यक्तिगत कार्य था।

आपसे वार्ता के दौरान राज के दीपक का उपयोग करता तो वह अनैतिक होता चाणक्य का यह जवाब सुनकर चीनी दार्शनिक उनके सामने नतमस्तक हो गया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हम अपने मन के भावों को अच्छा बनाये रखेंगे तो बच्चों को जब ये खिलौना बजाकर देंगे भगवान राजी हो जायेगा और मन के भाव अच्छे नहीं होगे तो यो कई लागे मारो ? तू किस जात का है भाई ? अरे! कौनसी जात का, इंसानियत की जात का है, लो बाँटो। अपने हाथों को पवित्र करो, अपने कर–कमलों को पवित्र करो।

लाला, बाबू समभावों की पुष्टि करना ये कोई बहुत बड़ा शब्द नहीं है। सम्पट राखजो कहते हैं ना, चलने में सम्पट रखना मतलब ध्यान रखाजो। घर में सम्पट रखाजो मतलब सहनशीलता रखना, घर में एका रखना। कहानी सुनी ना, बचपन में पिता को लगा कि मेरे बच्चे दोनों –तीनों बच्चे हैं लड़ते है, झगड़ते हैं। मृत्यु के समय उनको बुलाकर कहा – एक लकड़ी को तोड़ो, सबने तोड़ दी, फिर लकड़ी का एक गठ्ठर देकर कहां कि इसको तोड़ो कोई नहीं तोड़ पाया। एकता में सार है

एक बनेगे नेक बनेगे,
हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।
हम बदलेंगे युग बदलेगा।।
जन्म जहाँ पर हमने पाया,
अन्न जहाँ का हमने खाया,
वस्त्र जहाँ के हमने पहने,
ज्ञान जहाँ का हमने पाया।
वह है प्यारा देश हमारा।।

ये गदा हाथ में आयी, गदा तो बाजार में मिल जायेगी पर भीमसेन जी नहीं मिलेंगे। गदा तो बाजार में मिल जायेगी पर अंगद जी नहीं मिलेंगे। जिन अंगद् जी ने पैर रोप दिया था।

सम्पादकीय

छल, कपट व झूठ जीवन के नकारात्मक पहलू हैं। जीवन में जब भी नकारात्मकता का प्रवेश होता है तभी हमारा आभामंडल सिकुड़ने लगता है। हमारी आत्मीय चमक फीकी होने लगती है। हमारी केवल और केवल सकारात्मक विचारों की नींव पर खड़ी इमारत है। इसकी दृढ़ता बनाये रखने के लिए नकारात्मकता की दीमक से बचाना जरूरी है। दुनिया के इतिहास को देखें तो छल, कपट या झूठ से जिसने भी सफलता अर्जित की है, उसकी सफलता कहाँ टिक पाई है। उदाहरण तो ऐसे हैं कि उस सफलता के बाद ऐसी गिरावट आई कि अर्जित तो गया ही, साथ में संगृहीत भी नहीं रहा। छल, कपट और झूठ कभी भी लम्बे समय तक चल नहीं सकते। यहाँ तक कि इन बुराइयों का प्रयोगकर्त्ता भी हर समय सशंक रहता है। वह भी प्रतिक्षण इस भय में जीता है कि कहीं पोल न खुल जाए। जो सफलता भय पर आधारित होगी, वह कैसे टिकेगी। इसलिए इनसे बचना ही उपाय है।

कुछ काव्यमय

छल व्यवहार चले नहीं,
ईश्वर के दरबार।
कपट झूठ त्यागे बिना,
मिले न प्रभु का प्यार।।
छल से पाई सफलता,
कितना देगी साथ।
साथ सत्य का छूटता,
होते तभी अनाथ।।
कहते हैं होते नहीं,
कभी झूठ के पैर।
फिर कैसे अपने सधे,
गैर रहेंगे गैर।।
हमने सुना कि कपट का,
ना चलता व्यापार।
औरों की तो हानि है,
खुद का बंटाधार।।
कचरा फेंको कपट का,
फेंक दीजिये झूठ।
छल से सींचोगे अगर,
जीवन होगा ठूंठ।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

दान से होता जीवन सफल

जीवन को सार्थक बनाने के लिए सभी धर्मों में दीन दुःखियों की सेवा को सर्वोपरि कहा गया है। दान करने से न केवल जीवन में कठिनाइयों का स्वतः समाधान मिलता है बल्कि मृत्यु के बाद परलोक की यात्रा भी सुखद हो जाती है।

एक राजा अपनी न्यायप्रियता और समाजसेवा के कारण काफी लोकप्रिय था यह दरबार में नए – नए प्रश्न खड़े कर जनता और दरबारियों को जीवन को सार्थकता के लिए कोई न कोई सबक प्रायः दिया ही करता था। एक दिन उसने दरबार में पूछा कि मनुष्य मरते वक्त क्या सोचता है। और उसके बाद क्या होता है ? कोई इसका जवाब नहीं दे पाया। तब राजा ने नगर में ढ़िढोरा पिटवा दिया कि जो भी व्यक्ति एक रात कब्र में रहकर दूसरे दिन मरने और उसके बाद का अनुभव बताएगा उसे सोने की पांच सौ मोहरें दी जाएंगी। जीते जी मरने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। राजा को इसकी सूचना दी गई। इसी दौरान एक व्यक्ति आया और वह एक रात कब्र में गुजारने के लिए तैयार हुआ। यह व्यक्ति पड़ोसी शहर का एक धनवान व्यक्ति था जिसने किसी भी दीन दुःखी की कोई सेवा न कर सिर्फ जब तक का समय धन जोड़ने में ही लगाया और अब भी वह धन के लिए ही जोखिम उठा रहा

था। उसकी अर्थी सजाई गई और दरबार से शमशान की तरफ रवाना की गई। रास्ते में एक फकीर ने अर्थी के पास जाकर मरने जा रहे व्यक्ति से कहा तुम्हारे पास रखा धन क्या काम आएगा? अब तो थोड़ा मुझे दान कर जाओ। धनवान व्यक्ति ने उसे झिड़क दिया। फिर भी फकीर उसे दान मांगते हुए उसके साथ ठेठ शमशान तक गया। जहां कब्र खोदी जा रही थी वहीं पास में अर्थी रखी गई फकीर फिर उसे कहा कि अब तुम्हारा पास समय बहुत कम है। कुछ तो पुण्य कर जाओ अर्थी में लिपटे व्यक्ति ने गुस्से से पास में पड़े कचरे के ढेर से एक मुठ्ठी भर कर फकीर के झोली मे डाल दी। यहां कचरा अखरोट के छिलकों का था। जिससे कोई वहां डाल गया था। फकीर निराश होकर चला गया कब्र तैयार होने पर व्यापारी को उसमें सुला दिया। और उपर से मिट्टी डाल दी गई उसके सिर की तरफ एक छेद रखा गया ताकि वह सांस ले सके पूरी कब्र मिट्टी पाटने के बाद लोग लौट गए। रात हुई कब्र में लेटा व्यक्ति घबराने लगा उसने अपने निर्णय पर पछतावा भी होने लगा। आधी रात बाद में उसने पुकार सुनी एक सांप कब्र के छेद में घुसने का प्रयत्न कर रहा था तभी वह छेद बंद हो जाता कभी खुल जाता दरअसल, वे अखरोट के ही छिलके थे। जो बार–बार उड़कर छेद पर आ जाते और सांप को अंदर घुसने से रोक रहे थे। रात गुजर गई छेद में से कब्र में प्रकाश के प्रवेश के साथ उसमें सोया व्यक्ति पूरे जोर के साथ उसमें से निकला और उसने देखा कि जहां छेद था वहां अखरोट के काफी छिलके पड़े हुए थे। वह समझ गया कि फकीर को दिये छिलके ही उसकी प्राण रक्षा के कारण बने। उसकी समझ में आ गया कि दान ही जीवन को सार्थक बना सकता है। सुबह राजा के आदमी उसे लेने आये वह उनके साथ न जाकर श्मशान से सीधे घर गया और अपनी सम्पति में बडा हिस्सा गरीबों में बांट दिया । उसके बाद वह राजा के पास गया और अपनी आपबीती बताई।

–कैलाश 'मानव'

विवेक का फैसला

हर व्यक्ति सफल होना चाहता है। उसका यह चाहना गलत भी नहीं है। क्योंकि मानव देह का मिलना ही बड़ा दुर्लभ है। और जब वह मिली है तो उसका सार्थक भी है। करना भी है। जीवन भी सार्थकता अथवा सफलता उसी में है कि हम अपने निर्वाह के लिए तो परिश्रम करें ही साथ ही दूसरों के लिए ही खुशी का कारण बनें। सफलता और समृद्धि के लिए हम गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाई को ग्रहण करना चाहिए जिसमें वे कहते है कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई, अर्थात् जरूरतमंदों की सेवा सबसे बडा धर्म है। आपका अपना नारायण सेवा संस्थान आपके सहयोग से इसी ध्येय को लेकर चल रहा है। सफलता के यू तो कई आयाम हैं। जिसमें भौतिक सुख

सुविधाओं का अर्जन भी शामिल है। लेकिन वह एकमात्र. नहीं व्यक्ति की सफलता दूसरों के योगक्षेम के साथ जुडी हुई है। किसी भी कार्य की सफलता अकेले बल, बुद्धि और संकल्प से ही सुनिश्चित नहीं होती बल्कि उन तीनों का सम्मिलित रूप ही सफलता का श्रेय प्राप्त कर सकता है। सफलता का श्रेय किसे मिले इस बात पर संकल्प बल और बुद्धि में विवाद हो गया विवाद के हल के लिए विवेक को पंच बनाया गया। विवेक उनके साथ लौह की एक टेढ़ी कील और हथौड़ा अपने हाथ में लेकर निकल पड़ा। मार्ग में एक बालक मिला जिसने उसे कहा कि यदि तुम इस टेढ़ी कील को सीधा कर दोंगे तो तुम्हे बहुत सारी मिठाइया दूंगा बालक खुश हो गया वह बड़ी आशा प्रयत्न और कील को सीधा करने लगा। लेकिन भारी हथौड़ा उठाने लायक बल नहीं था उसे सफलता नहीं मिली। इससे निष्कर्ष निकला कि अकेला संकल्प सफलता के लिए अपर्याप्त है। थोड़ा आगे एक श्रमिक सोया हुआ खर्राटे ले रहा था विवेक ने उसे जगाया और बोला इस कील को सीधा कर दोंगे तो दस रुपये दूंगा। उनींदी आंखों से श्रमिक ने कुछ प्रयास किया पर नींद की खुमारी ऐसे थी कि हथौड़े को एक तरफ रख फिर से सो गया। निष्कर्ष निकला कि अकेला बल भी काफी नहीं है। श्रमिक सामर्थ रखते हुए भी संकल्प के अभाव में कील को सीधा न कर सका विवेक ने कहा आप तीनों को जान लेना चाहिए कि जब तक आप तीनों को सम्मिलित रूप नहीं बनेगा तब तक सफलता का स्वरूप नही बनेगा। एकाकी रूप में आप तीनों ही अधूरे अपूर्ण है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

मफत काका का खुद का बचपन अत्यन्त गरीबी में व्यतीत हुआ था। उनका जन्म गुजरात में हुआ था मगर वे मुम्बई आकर रहने लगे थे। उनकी माता का नाम दीवाली बेन था। उनकी माता अक्सर उन्हें कहती रहती थी कि बेटा ! अगर जिन्दगी में कभी भगवान तुझे रुपये दे तो गरीबों को सूखड़ी खिलाना। गुजरात में सत्तू को सूखड़ी ही कहते हैं। मां कहती थी सूखड़ी खिलाना और छाछ पिलाना। पानरवा के गरीबों को अपने हाथों में सूखड़ी खिलाते और छाछ पिलाते हुए मफत काका की आंखों के सामने बरबस ही मां का चेहरा उभर आता था और वे अपने आंसू रोक नहीं पाते थे।

कमला की बड़ी इच्छा थी कि यहां से 5–7 अनाथ बच्चों को उदयपुर ले जाकर उनका लालन–पालन व पढ़ाई लिखाई की जाये। जीप में जगह थी नहीं, यह भी प्रश्न था कि इन्हें ले जाकर रखा कहां जाये? कमला ने कहा–अब तो हमारे पास जमीन भी है। कैलाश ने कहा–जमीन होने से क्या होता है, उस पर कुछ निर्माण करने के लिये पैसे भी तो चाहियें। कमला बोली –जमीन खुद बुलायेगी दानदाताओं को और इस पर भवन बनेगा और आगे कुछ हो सकेगा। कैलाश ने मन ही मन कमला की इच्छाएं पूर्ण होने की कामना की।

पानरवा से 4–5 अनाथ बच्चे किसी तरह जीप में बिठाकर उदयपुर ले आए। कमला उनकी प्राण–पण से सेवा करती। इस बीच से.4 में यू.आई. टी. से खरीदी जमीन पर तुलसी का एक पौधा लगा दिया और इसे सेवा धाम नाम दे दिया। अब रोज वहां जाकर गायत्री मंत्र का जाप करने लगे और जल छोड़ने लगे। इससे जमीन के प्रति अपनत्व की अनुभूति होने लगी।

अंश - 143

सर्दी से बचे बुजुर्ग

बुजुर्ग हो जाएं सावधन! सर्दियों का मौसम स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहतर माना जाता है, परन्तु ये अपने साथ कुछ समस्याएं भी लाता है। तापमान गिरने के साथ ही वातावरण में वायरस की संख्या भी बढ़ने लगती हैं, जिससे अधिक प्रभावित होते है हमारे बुजुर्ग।

कान में संक्रमण– मौसम का असर कान पर भी पड़ता है। सर्दी की शुरूआत में अक्सर इसका पता नहीं चलता। इसके प्रमुख लक्षणों में बुखार और कान में तेज दर्द होना है।

गले में संक्रमण – ठंड के मौसम में गले का संक्रमण बहुत अधिक बढ़ जाता है। ऐसा वायरस के कारण होता है, जो आमतौर पर 6–7 दिन में ठीक हो जाता है। इसमें नमक मिले गर्म पानी के गरारे करते रहना चाहिए। इसके बाद भी ठीक न हो तो डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

दमा– तापमान में गिरावट, कोहरा, प्रदूषण या वायरल संक्रमण के कारण इस मौसम में सांस संबंधी समस्याएं ज्यादा होती है। इनमें दमा (अस्थमा) प्रमुख है। इसमें सांस फूलने, सांस लेते वक्त सांय–सांय की आवाज आने, पीला या सफेद बलगम आने, खांसी बढ़ने और रात को न सो पाने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। ऐसे में डॉक्टर के पास जाकर अपनी दवा की मात्रा नए सिरे से निश्चित करवाएं। गर्म कपड़े पहनें और सिर व कान को ढककर रखें। दवाएं नियमित रूप से लें और खाने में हल्दी, अदरक, तुलसी, काली मिर्च, केसर आदि का प्रयोग करें। ठण्डी चीजें अथवा शीतल पेय के सेवन से बचें।

लू – यह भी वायरस से होन वाली बीमारी है। इसमें तेज बुखार, बदन दर्द, सिर और गले में दर्द, खांसी और कभी–कभी सांस लेने में समस्या होने जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। ऐसे लोगों को घर में ही आराम करना चाहिए। बहुत जरूरी न हो तब तक सार्वजनिक स्थलों पर नहीं जाना चाहिए। साफ–सफाई का भी पूरा ध्यान रखें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्साक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

एक बेटे ने कहा– हाँ, पिताजी मैं अपनी जवानी आपको समर्पित करता हूँ। आपका बुढ़ापा में ले लेता हूँ। उस बेटे को आशीर्वाद दिया। फिर पुनः जीवन का भोग भोगा, फिर भी भोग से स्वाधीनता नहीं मिली। भोग से मुक्ति नहीं मिली भाइयों–बहनों। पी.जी. जैन साहब ने कहा– बाबूजी, सब कुछ मिल गया। मेरा बड़ा बेटा बेंगलौर में है सुरेश। आपको सेवाधाम की जमीन यूआईटी ने बयालीस रुपया पर स्क्वायर फिट में दे दी है। आपके मन में स्वप्न है दीन–दुःखी, अनाथ बच्चों को लाने का, उनको संस्कारित करने का, आपका स्वप्न जरूर पूरा होगा। मैं बंगलौर ले चलूंगा आपको। मेरा एक बेटा ताम्ब्रम् में है मैं वहाँ ले चलूंगा। मैं कोयम्बटूर ले चलूंगा। चैन्नई मैं मेरे कजीन भाणेज है, मैं सब कुछ कराऊंगा। रात को ग्यारह बज गयी बातें करते– करते। कपड़े उनके हाथीपोल पड़े थे, जैन धर्मशला में। ग्यारह बजे वहाँ ले गये। कपड़े ले के आये, बेग ले के आये। साढ़े बारह –एक बजे सोये। कौन नींद लाता है? कौन जगाता है? जिन वैज्ञानिक ने इसकी शोध करके साहब ये नस हो सकती है जगाने वाली और सोने वाली। इस पर उसको नोबेल पुरस्कार मिल गया। करोड़ों –अरबों – खरबों नसें। हाँ, घूमता रहता है, घूमता रहता है परिक्रमा करता रहता है कैलाश। विपश्यना ध्यान की परिक्रमा। समभाव, संस्कार बदलने की परिक्रमा। संस्कार अच्छे आवे। हमारी जजमेंट करने का भाव अच्छा हो जावे। हमारे निर्णय अच्छे हो जावे। हमारे निर्णय समय पर हो जावे, और व्यवहार में ढल जावे। इस संसार के रंगमच पर हम किसी के काम आ जावे। जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर बनना नहीं चाहते, तनख्वाह भली ज्यादा है। यदि विचार नहीं है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 269 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023